IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

1857 की क्रांति में झारखंड का योगदान: एक विस्तृत शोध विश्लेषण

हिमांशु कुमार राय

शोधार्थी, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, सारण

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध लेख 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में झारखंड (तत्कालीन छोटानागपुर और संथाल परगना) की सामरिक और जन-भागीदारी का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। झारखंड में इस क्रांति का प्रादुर्भाव 12 जून 1857 को देवघर के रोहिणी गांव से हुआ और शीघ्र ही इसने रांची, पलामू, हजारीबाग और सिंहभूम जैसे क्षेत्रों को अपनी चपेट में ले लिया। यह शोध केवल सैन्य विद्रोह के बजाय इसे एक 'जन-आंदोलन' के रूप में चित्रित करता है, जिसमें ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव की 'मुक्ति वाहिनी', नीलांबर-पीतांबर का छापामार युद्ध और राजा अर्जुन सिंह के नेतृत्व में 'हो' आदिवासियों का संगठित प्रतिरोध शामिल था। लेख उन सामाजिक-आर्थिक कारकों की भी समीक्षा करता है, विशेष रूप से 'खूंटकट्टी' अधिकारों का हनन और औपनिवेशिक शोषण, जिसने इस विद्रोह को उर्वर भूमि प्रदान की। अंततः, लेख गद्दारी के कारकों और दमन के बावजूद भविष्य के जनजातीय आंदोलनों पर इस क्रांति के वैचारिक प्रभाव को रेखांकित करता है।

कीवर्ड (Keywords)

1857 का विद्रोह, झारखंड का इतिहास, ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, राजा अर्जुन सिंह, नीलांबर-पीतांबर, मुक्ति वाहिनी, जनजातीय प्रतिरोध, छोटानागपुर, औपनिवेशिक नीतियां, चतरा का युद्ध।

1. प्रस्तावना (Introduction)

1857 की क्रांति भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में वह मील का पत्थर है जिसने ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को पहली बार झकझोरा। हालांकि मुख्यधारा के इतिहास में मेरठ और दिल्ली को ही इसका केंद्र माना जाता है, परंतु झारखंड की पहाड़ियों और जंगलों में जल रही विद्रोह की ज्वाला किसी भी दृष्टि से कम महत्वपूर्ण नहीं थी । झारखंड के लिए 1857 का संग्राम कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि यह 1765 में दीवानी अधिकार प्राप्त करने के बाद से ही चल रहे सतत प्रतिरोध की एक परिणति थी। 1831-32 का कोल विद्रोह और 1855-56 का संथाल 'हूल' वे आधारभूत घटनाएं थीं जिन्होंने झारखंड के आदिवासियों और स्थानीय निवासियों को संगठित सैन्य प्रतिरोध का अनुभव प्रदान किया था।

झारखंड में इस विद्रोह की विशिष्टता यह थी कि यहाँ सिपाही और नागरिक कंधे से कंधा मिलाकर लड़े। जहाँ रोहिणी में यह एक सैन्य विस्फोट के रूप में शुरू हुआ, वहीं पलामू और सिंहभूम पहुँचते-पहुँचते इसने एक व्यापक जनजातीय और नागरिक युद्ध का स्वरूप ले लिया ।

2. विद्रोह के कारण: एक क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य

झारखंड में असंतोष के बीज यहाँ की विशिष्ट सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के साथ ब्रिटिश हस्तक्षेप के कारण बोए गए थे:

- **आर्थिक शोषण और भूमि अधिकार:** अंग्रेजों की 'स्थायी बंदोबस्त' प्रणाली ने आदिवासियों के पारंपरिक 'खूंटकट्टी' (सामूहिक स्वामित्व) अधिकारों को नष्ट कर दिया। आदिवासियों को उनकी ही जमीन पर किराएदार बना दिया गया और लगान की ऊंची दरों ने उन्हें साहूकारों (दिक्कू) के चंगुल में फँसा दिया।
- **प्रशासनिक और न्यायिक हस्तक्षेप:** अंग्रेजों ने स्थानीय स्वशासन की 'पढ़ा-पंचायत' और 'मानकी-मुंडा' व्यवस्था को दरकिनार कर अपनी जटिल कानूनी प्रणाली लागू की, जिससे स्थानीय जनता असुरक्षित महसूस करने लगी ।
- **धार्मिक और सांस्कृतिक कारक:** ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों और पारंपरिक आस्थाओं पर प्रहार ने आदिवासियों में एक सांस्कृतिक रक्षात्मक भाव पैदा किया ।

3. क्रांति का प्रस्फुटन: रोहिणी से हजारीबाग तक

झारखंड में क्रांति की औपचारिक शुरुआत 12 जून 1857 को देवघर जिले के **रोहिणी** गांव से हुई । यह उस समय 32वीं नेटिव इन्फैंट्री का मुख्यालय था। यहाँ तीन विद्रोही सैनिकों—सलामत अली, अमानत अली और शेख हारून—ने मेजर मैकडोनाल्ड के आदेशों की अवज्ञा करते हुए लेफ्टिनेंट नॉर्मन लेस्ली की हत्या कर दी। यद्यपि इन तीनों वीरों को फांसी दे दी गई, परंतु इसने पूरे छोटानागपुर में विद्रोह का बिगुल फूंक दिया।

इसके लगभग डेढ़ महीने बाद, 30 जुलाई 1857 को **हजारीबाग** में रामगढ़ बटालियन के सैनिकों ने खुले विद्रोह की घोषणा कर दी। विद्रोहियों ने जेल के द्वार खोलकर सभी कैदियों को मुक्त कर दिया और सरकारी खजाने को लूट लिया। उपायुक्त मेजर सिम्पसन को जान बचाकर कोलकाता भागना पड़ा।

4. रांची और डोरंडा: मुक्ति वाहिनी का वैचारिक गढ़

हजारीबाग की सफलता ने रांची के सैनिकों और जमींदारों को प्रेरित किया। 2 अगस्त 1857 को हजारीबाग के विद्रोही सैनिक रांची के डोरंडा छावनी पहुँचे और उस पर कब्जा कर लिया । रांची में विद्रोह को एक संगठित और राजनीतिक दिशा नागवंशी राजा **ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव** ने प्रदान की ।

शाहदेव ने अपने दीवान **पांडेय गणपत राय** को अपना मुख्य सेनापति नियुक्त किया और **'मुक्ति वाहिनी'** नामक एक नागरिक सेना का गठन किया । इस सेना ने रांची से ब्रिटिश सत्ता को पूरी तरह खदेड़ दिया और कमिश्नर डाल्टन को हजारीबाग शरण लेनी पड़ी । मुक्ति वाहिनी के अन्य प्रमुख नायकों में टिकैत उमराव सिंह, शेख भिखारी, नादिर अली खान और जयमंगल पांडे शामिल थे।

5. सिंहभूम का संघर्ष: राजा अर्जुन सिंह और 'हो' आदिवासी

सिंहभूम क्षेत्र में विद्रोह का स्वरूप अत्यंत उग्र और जनजातीय था। यहाँ विद्रोह के निर्विवाद नेता पोड़हाट के **राजा अर्जुन सिंह** थे। अर्जुन सिंह का 'हो' (Ho) आदिवासियों पर इतना गहरा प्रभाव था कि वे उन्हें देवता के रूप में पूजते थे ।

जब चाईबासा के विद्रोही सैनिक संजय नदी पार कर रहे थे, तो अर्जुन सिंह ने उन्हें सहायता प्रदान की और उनके दीवान **जगबंधु पटनायक (जग्गू दीवान)** ने रसद की व्यवस्था की । सिंहभूम में संघर्ष दो चरणों में चला—पहला चरण स्थानीय प्रतिद्वंद्विता का था और दूसरा चरण अंग्रेजों के खिलाफ 'हो' आदिवासियों का आर-पार का युद्ध बन गया, जिसमें तीर-धनुषों ने ब्रिटिश बंदूकों का मुकाबला किया।

6. पलामू में नीलांबर-पीतांबर और छापामार युद्ध

पलामू क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व खरवार और बोगता जनजाति के दो भाइयों—**नीलांबर शाही और पीतांबर शाही**—ने किया। इन्होंने चेरो जमींदारों के साथ मिलकर एक शक्तिशाली मोर्चा बनाया। पलामू का भूगोल क्रांतिकारियों के लिए सहायक सिद्ध हुआ, जहाँ उन्होंने घने जंगलों और पहाड़ों से छापामार युद्ध (Guerrilla Warfare) पद्धति अपनाई।

21 अक्टूबर 1857 को इन्होंने ब्रिटिश वफादार रघुबर दयाल के ठिकानों पर हमला किया और पलामू के ऐतिहासिक दुर्ग को अपना केंद्र बनाया। कमिश्नर डाल्टन को पलामू के विद्रोह को दबाने के लिए मद्रास इन्फैंट्री और रामगढ़ कैवेलरी की भारी फौज बुलानी पड़ी।

7. चतरा का युद्ध: एक निर्णायक और त्रासदीपूर्ण मोड़

2 अक्टूबर 1857 को चतरा में लड़ा गया युद्ध झारखंड के क्रांतिकारी इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। मुक्ति वाहिनी के विद्रोही सैनिक बिहार के बाबू कुंवर सिंह के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध एक साझा मोर्चा खोलने के लिए रोहतास की ओर बढ़ रहे थे।

चतरा में मेजर इंग्लिश के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना से इनका भीषण सामना हुआ। इस युद्ध में क्रांतिकारियों ने अदम्य साहस दिखाया, लेकिन आधुनिक हथियारों की कमी के कारण वे पराजित हुए। 4 अक्टूबर 1857 को **सूबेदार जयमंगल पांडे** और **नादिर अली खान** को चतरा में ही एक पेड़ से फांसी दे दी गई। यद्यपि शाहदेव और गणपत राय वहां से बच निकले, परंतु उनकी सैन्य शक्ति को इस युद्ध ने अपूरणीय क्षति पहुँचाई।

8. विश्वासघात, दमन और शहादत

झारखंड में विद्रोह की विफलता का एक प्रमुख कारण आंतरिक विश्वासघात था। पिथौरिया के परगनैत **जगतपाल सिंह** ने न केवल अंग्रेजों को रसद प्रदान की, बल्कि क्रांतिकारियों के गुप्त ठिकानों की जानकारी भी साझा की। इसी गद्दारी के कारण ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव को बंदी बनाया जा सका।

अंग्रेजों ने दमन की अत्यंत क्रूर नीति अपनाई। 16 अप्रैल 1858 को ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव को और 21 अप्रैल 1858 को पांडेय गणपत राय को रांची जिला स्कूल के पास नीम के पेड़ से फांसी दे दी गई। टिकैत उमराव सिंह और शेख भिखारी को चुटुपालू घाटी में फांसी दी गई। पलामू के नीलांबर-पीतांबर को 28 मार्च 1859 को लेस्लीगंज में फांसी दी गई।

9. निष्कर्ष और ऐतिहासिक विरासत

1857 की क्रांति झारखंड की धरती पर स्वाभिमान और बलिदान की एक गौरवगाथा है। यद्यपि सैन्य रूप से यह आंदोलन सफल नहीं हो सका, लेकिन इसने झारखंड की जनजातियों में एक नई राजनीतिक चेतना का संचार किया। इसी संघर्ष ने सिद्ध किया कि झारखंड के लोग अपनी 'जल, जंगल और जमीन' की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने को सदैव तत्पर हैं।

इस क्रांति ने वह वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की जिसने आगे चलकर भगवान बिरसा मुंडा के 'उलगुलान' और टाना भगत आंदोलन को ऊर्जा प्रदान की। झारखंड के ये शहीद केवल क्षेत्रीय नायक नहीं थे, बल्कि वे भारतीय राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम के वे स्तंभ थे जिन्होंने अपनी शहादत से आजादी की नींव रखी। आज भी रांची के नीम के पेड़ और पलामू की पहाड़ियाँ इन वीरों की अनकही गाथाओं की साक्षी हैं।

संदर्भ सूची

1. केसरी, बी.पी. *झारखंड के शहीद.* नागपुरी भाषा संस्थान, 2010.
2. केसरी, बी.पी. *झारखंड के स्वतंत्रता सेनानी.* अनुज्ञा बुक्स, 2021.
3. चौधरी, प्रसन्न कुमार और श्रीकांत. *1857: बिहार-झारखंड में महायुद्ध.* राजकमल प्रकाशन, 2008.
4. झा, जे.सी. *छोटानागपुर का कोल विद्रोह.* बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी.
5. तिग्गा, स्मिता. "छोटानागपुर में 1857 के विद्रोह का विरोध किसने किया?" *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट,* खंड 7, अंक 1, 2023.
6. दत्ता, कालीकिंकर. *बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड-1.* के.पी. जायसवाल शोध संस्थान, 1957.
7. दत्ता, कालीकिंकर. *कुंवर सिंह और अमर सिंह की जीवनी.* के.पी. जायसवाल शोध संस्थान, 1984.
8. विरोत्तम, बलमुकुंद. *झारखंड का इतिहास और संस्कृति.* बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1990.
9. मंडल, अशोक कुमार. *झारखंड में 1857 की क्रांति का इतिहास.* 2014.
10. मजूमदार, आर.सी. *1857 का भारतीय विद्रोह.* (हिंदी अनुवाद), फर्म के.एल. मुखोपाध्याय, 1962.
11. महतो, शैलेन्द्र. *झारखंड में विद्रोह का इतिहास (1767-1947).* प्रभात प्रकाशन, 2023.
12. महतो, शैलेन्द्र. *झारखंड की समरगाथा.* अनुज्ञा बुक्स, 2011.
13. महतो, सत्यप्रिय और भवेश कुमार. *झारखंड के स्वतंत्रता सेनानी.* शाश्वत पब्लिकेशन, 2023.
14. मिश्रा, आशा और चित्तरंजन कुमार पति, संपादक. *झारखंड में जनजातीय आंदोलन, 1857-2007.* कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, 2010.
15. मेहता, अशोक. *1857: महान विद्रोह.* (हिंदी अनुवाद), राजकमल प्रकाशन.
16. रचित, सुनामी गुरु. "झारखंड में 1857 की क्रांति के नायक." *Incredible GS शोध पत्र,* 2022.
17. सावरकर, विनायक दामोदर. *1857 का भारतीय स्वातंत्र्य समर.* (हिंदी अनुवाद).
18. सिंह, के.एस. *बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन.* वाणी प्रकाशन, 1985.
19. सेन, असोका कुमार. "1857 का महान विद्रोह और सिंहभूम के आदिवासी." *रीथिंकिंग 1857,* ओरिएंट लॉन्गमैन्स, 2008.
20. "1857 के विद्रोह में झारखंड का योगदान." *विकासपीडिया,* झारखंड सरकार शिक्षा विभाग, 2025.